* M A K - 0 0 9 - 0 0 1 3 0 3 *

MAK-009-001303 Seat No. ________

B. R. S. (Sem. III) (CBCS) Examination

October / November – 2016

FND-322 : Hindi Foundation - 2

(New Course)

Faculty Code : 009
Subject Code : 001303

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : सूचनानुसार उत्तर दीजिए ।

१ रामकुमार वर्मा के जीवन–कवन पर प्रकाश डालिए । १५

अथवा

आदर्श गृहिणी के रूप में शारदा का चरित्रांकन कीजिए ।

२ 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का कथानक लिखिए । १५

अथवा

'पर्दे के पीछे' एकांकी का कथानक लिखिए ।

३ निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : १५

(१) ''मैंने बी.ए. पास किया है । कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक–झाँककर कायरता दिखायी है । मुझे अपनी इज्जत – अपने मान का ख्याल तो है ।''

(२) ''आप कहते हैं, औरत को समझ नहीं पाता । जनाब ये सब कोरी बातें हैं बाते । समझने की क्या जरूरत है ? मशीन की एक पुली दूसरी पुली को नापने जोखने समझने नहीं जाती ।''

(३) ''मनुष्यों के लिए तो लोगों ने अस्पताल खोल ही रखे हैं । इन बेचारे पशु–पक्षियों को भी कोई पूछने वाला हो ? मैं तो जब किसी पशु–पक्षी को दुःखी–बीमार देखूँ रूँ, दया के मारे जी भर आवे हैं ।''

(४) ''यह प्रेम का ताप है । जितना बढ़ता है, सौन्दर्य उतना ही निखरता है, कविता उतनी ही प्रखर होती है, उन्माद उतना ही मादक होता है ।''

(५) ''अनुशासन की मर्यादा पर बड़े से बड़े व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है ।''

४ 'प्रतिशोध' एकांकी का कथानक लिखिए । १५

अथवा

गोपालप्रसाद का चरित्र–चित्रण कीजिए ।

५ माँग ड्राफ्ट का भुगतान रोकने के लिए बैंक मेनेजर को पत्र लिखिए । १०

अथवा

निम्नलिखित परिच्छेद का सारलेखन कीजिए :

कितना वीरान है यह जन समुद्र ! .... ये कोलाहल से भरी सडकें .... आदमी पर जीता हुआ आदमी .... ये कारें, बसें, मोटरें, शोर करते हुए स्कूटर, इमारतें और इमारतों में अपना खून चुसवाते हुए निरीह लोग जिनके पास अपनी कोई जिन्दगी नहीं है । न अपनी आकांक्षाएँ और न सपने । न अपने फैसले और न अपनी आजादी ! धरती से आसमान तक लम्बी मीनार है, जिसके तल में करोड़ों, अरबों आदमी खड़े हैं और उनकी गर्दनों पर दूसरे सवार हैं – उन दूसरों पर तीसरे सवार है – उन तीसरों पर चौथे सवार है और आसमान तक यही सिलसिला चला गया है । करोड़ों–अरबों की जिन्दा मीनार है और करोड़ों–अरबों फालतू पड़े हैं – अपने जख्मों को चाट–चाटकर प्यास बुझाते हुए । किसी के पास किसी के लिए वक्त नहीं है । किसी के पास किसी के लिए करूणा नहीं है ।